AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

छत्तीसगढ़ के स्थानीय राजवंश–पाण्डुवंशः एक ऐतिहासिक पुनरावलोकन

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. डी. एन. खुटे
सहायक प्राध्यापक
इतिहास अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

आधुनिक छत्तीसगढ़ प्राचीन काल में दक्षिण कौसल कहलाता था। प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में दक्षिण–कौसल के शासकों का नाम वर्णित है। पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय के अनुसार– प्राचीन काल में दक्षिण कौसल की सीमा का निर्धारण इस प्रकार था– उत्तर में गंगा, दक्षिण में गोदावरी, पश्चिम में उज्जैन तथा पूर्व में उड़ीसा। चीनी यात्री व्हेनसांग के अनुसार दक्षिण कौसल की तत्कालीन राजधानी सिरपुर थी। प्राचीन इतिहास के आधार पर यहाँ मौर्यों, सातवाहनों, गुप्तों, राजर्षितुल्य–कुल, शरभपुरीय, सोमवंशियों और नलवंशीय शासकों का शासन विद्यमान था। क्षेत्र का इतिहास उस क्षेत्र विशेष की संस्कृति पर प्रभाव डालता है। क्षेत्र का पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करने के लिये दक्षिण कौसल के विभिन्न राजवंशों की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है। छठवीं शताब्दी ईस्वी में दक्षिण कौसल के बहुत बड़े भू–भाग पर पाण्डुवंशी राजाओं का शासन था। शरभपुरीय वंश के शासन की समाप्ति के बाद पाण्डुवंशियों ने दक्षिण कोसल में अपने साम्राज्य की स्थापना की तथा सिरपुर को अपनी राजधानी बनाया। मेकल में इस राजवंश को पाण्डुवंश तथा दक्षिण कौसल में इन्हें सोमवंशी कहा गया है। पाण्डुवंशी राजा सोमवंशी थे और वैष्णव धर्म को मानते थे। पाण्डुवंश के इतिहास को बताने वाले छः ताम्रपत्र और इतने ही शिलालेख छत्तीसगढ़ क्षेत्र और उसके आसपास से प्राप्त हुए है। सिरपुर से प्राप्त बालार्जुन के शिलालेख में इस वंश का पहला शासक उदयन बताया गया है। इसका पुत्र इन्द्रबल था जो शरभपुरी शासक सुदेव राज का सामन्त था। संभवतः इसी ने शरभपुरीयों को सत्ताच्युतकर पाण्डुवंश की स्थापना की थी।

मुख्य शब्द

दक्षिण कौसल, व्हेनसांग, शरभपुरीय, पाण्डुवंशी, बालार्जुन, कौसलाधिपति.

किसी प्रदेश के इतिहास एवं संस्कृति को प्रभावित करने वाले आधारभूत कारणों में संबंधित भू–भौतिकी पर्यावरण को नियायक तत्व के रूप में स्वीकार किया जाता है। भारतवर्ष के अंतर्गत अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण आदिम संस्कृति की विशेषताओं को संजोये रखने में समर्थ अनेक छोटे–छोटे प्रदेश विद्यमान है। इस दृष्टि से छत्तीसगढ़ प्रदेश का उल्लेखनीय स्थान माना जा सकता है। छत्तीसगढ़ प्राचीन काल से ही भू–विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, नृतत्व शास्त्र, समाज शास्त्र एवं इतिहास के अध्येताओं के लिये आकर्षण का केन्द्र रहा है। ''धान का कटोरा'' कहा जाने वाला छत्तीसगढ़ अंचल भारत वर्ष के हृदय प्रदेश मध्यप्रदेश का एक हिस्सा रहा है। यह मध्यप्रदेश पुनर्गठन विधेयक 2000 के द्वारा 1 नवम्बर 2000 को मध्यप्रदेश से पृथक होकर भारतीय संघ का 26वां राज्य बना। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 1,35,194 वर्ग कि.मी. है जो मध्यप्रदेश का 30.52 प्रतिशत तथा भारत का 4.14 प्रतिशत

भाग है।[1] यह प्रदेश भारत के अन्य प्रदेशों जैसे केरल, अरूणाचल प्रदेश, हिमाचल प्रदेश से काफी बड़ा है। छत्तीसगढ़ राज्य न तो किसी अंतर्राष्ट्रीय सीमा को छूती है और न ही किसी समुद्री सीमा को। वर्तमान में छत्तीसगढ़ भौगोलिक रूप से भारत के 7 राज्यों से घिरा है– उत्तर में उत्तर प्रदेश, उत्तर पूर्व में झारखण्ड, दक्षिण पूर्व में उड़ीसा, दक्षिण में तेलंगाना तथा आंध्रप्रदेश, दक्षिण पश्चिम में महाराष्ट्र एवं पश्चिम में मध्यप्रदेश।

छत्तीसगढ़ राज्य की भौगोलिक सीमा में राजनीतिक परिवर्तन के साथ–साथ सीमाएँ परिवर्तन होते रहे है। भारत की स्वतंत्रता के पूर्व छत्तीसगढ़ चौदह रियासतों में विभक्त था, जो सेंट्रल प्राविसेंस का ही एक घटक था। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक अमरकंटक, मंडला, बालाघाट का कुछ हिस्सा, उड़ीसा का संबलपुर, सोनपुर छत्तीसगढ़ भू–भाग का हिस्सा रहा है। उड़ीसा का संबलपुर 1905 तक छत्तीसगढ़ का एक प्रमुख जिला था, उसके पृथक होते ही उसकी पांच रियासतें छत्तीसगढ़ से हट गयी। इसके बदले झारखण्ड की पांच रियासतें सरगुजा, चांगभखार, उदयपुर, कोरिया व जशपुर सन् 1905 में छत्तीसगढ़ में सम्मिलित की गयी।[2]

आधुनिक छत्तीसगढ़ प्राचीन काल में दक्षिण कौसल कहलाता था। प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में दक्षिण–कौसल के शासकों का नाम वर्णित है। पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय के अनुसार– प्राचीन काल में दक्षिण कौसल की सीमा का निर्धारण इस प्रकार था– उत्तर में गंगा, दक्षिण में गोदावरी, पश्चिम में उज्जैन तथा पूर्व में उड़ीसा। चीनी यात्री व्हेनसांग के अनुसार दक्षिण कौसल की तत्कालीन राजधानी सिरपुर थी। प्राचीन इतिहास के आधार पर यहॉ मौर्यों, सातवाहनों, गुप्तों, राजर्षितुल्य–कुल, शरभपुरीय, सोमवंशियों और नलवंशीय शासकों का शासन विद्यमान था।[3] क्षेत्र का इतिहास उस क्षेत्र विशेष की संस्कृति पर प्रभाव डालता है। क्षेत्र का पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करने के लिये दक्षिण कौसल के विभिन्न राजवंशों की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है।

ईस्वी सन छठी सदी में दक्षिण कौसल के बहुत बड़े भू–भाग पर पाण्डुवंशी राजाओं का शासन था। शरभपुरीय वंश के शासन की समाप्ति के बाद पाण्डुवंशियों ने दक्षिण कोसल में अपने साम्राज्य की स्थापना की तथा सिरपुर को अपनी राजधानी बनाया। मेकल में इस राजवंश को पाण्डुवंश तथा दक्षिण कौसल में इन्हें सोमवंशी कहा गया है। पाण्डुवंशी राजा सोमवंशी थे और वैष्णव धर्म को मानते थे।[4] पाण्डु वंश के इतिहास को बताने वाले छः ताम्रपत्र और इतने ही शिलालेख छत्तीसगढ़ क्षेत्र और उसके आसपास से प्राप्त हुए है।[5] सिरपुर से प्राप्त बालार्जुन के शिलालेख में इस वंश का पहला शासक उदयन बताया गया है। इसका पुत्र इन्द्रबल था जो शरभपुरी शासक सुदेव राज का सामन्त था। संभवतः इसी ने शरभपुरीयों को सत्ताच्युतकर पाण्डुवंश की स्थापना की थी।[6]

मांदक से प्राप्त भवदेव रणकेशरी अभिलेख के अनुसार इन्द्रबल के चार पुत्र थे। इनमें सबसे बड़ा पुत्र नन्न राज प्रथम था। वह बहुत पराक्रमी होने के कारण अपने राज्य का खूब विस्तार किया। उन्होंने अपने शेष तीनों भाइयों को मण्डलाधिकारी के रूप में स्थापित किया था। दूसरे पुत्र का नाम सुरबल था। तीसरे पुत्र इशान देव का उल्लेख खरोद के लक्ष्मणेश्वर मंदिर के शिलालेख में प्राप्त होता है। चौथे पुत्र भवदेव रणकेशरी के विषय में जानकारी उसके मांदक शिलालेख से प्राप्त होती है।[7] इनके राज्यकाल में पाण्डुवंशियों का राज्य दक्षिण कोसल के बहुत बड़े भू–भाग पर विस्तृत हो चुका था।[8]

इस वंश की स्थिति को और अधिक सुदृढ़ करने का श्रेय महाशिव तीवर देव को जाता है जो नन्नराज का पुत्र तथा उत्तराधिकारी था। इनका समय पाण्डुवंशी सत्ता का उत्कर्ष काल माना जाता है। उन्होंने सिरपुर को अपनी राजधानी बनाया। महाशिव तीवर देव ने कोसल, उत्कल और अन्य मण्डलों पर अधिकार स्थापित करने के बाद ''कौसलाधिपति'' की उपाधि धारण की थी।[9] इनके तीन ताम्रपत्र राजिम और बलौदा एवं बोडा में प्राप्त हुए है। यह उनके पराक्रम की जानकारी देते है।[10] इन्होंने अपने ताम्रपत्रों में गरूड़ का अंकन करवाया था जो इनके परम भागवत होने का परिचायक है।[11]

महाशिव तीवर देव का उत्तराधिकारी उसका पुत्र महानन्नराज हुआ था। उसका एकमात्र ताम्रपत्र अड़भार (सक्ती तहसील) से प्राप्त हुआ है। इसमें अष्ट द्वार में एक ग्राम दान में दिये जाने का उल्लेख है।[12] इसमें उन्हें सकल कोसल मंडलाधिपति कहा गया है।[13] उसका शासनकाल अल्पकालीन था और वह निःसंतान भी था। अतः इनका उत्तराधिकारी

उसका चाचा चन्द्रगुप्त हुआ। सिरपुर के लक्ष्मण मंदिर स्थित शिलालेख में चन्द्रगुप्त का उल्लेख प्राप्त हुआ है।

चन्द्रगुप्त का उत्तराधिकारी उसका पुत्र हर्षगुप्त हुआ। उनका विवाह मगध के मौखरि वंश के राजा सूर्य वर्मा की पुत्री वासटा देवी से हुआ था। हर्षगुप्त की पत्नी वासटा देवी ने विधवा होने के बाद अपने पति की स्मृति में भगवान विष्णु का एक भव्य मंदिर सिरपुर में बनवाया जो लक्ष्मण मंदिर के नाम से आज भी विद्यमान है। इंटो से निर्मित यह मंदिर उस काल की वास्तुकला का एक श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करता है।[14]

हर्षगुप्त का उत्तराधिकारी उसका पुत्र महाशिवगुप्त हुआ। धर्नुविद्या में निपुण होने के कारण वह बालार्जुन कहा गया। वह 595 ई. के आसपास सिंहासनारूढ़ हुआ और उसने लगभग 60 वर्षों तक शासन करता रहा। बालार्जुन के द्वारा जारी ताम्रपत्र बारदुला, बोडा, लोधिया (रायगढ़), मल्हार (बिलासपुर) व सिरपुर अभिलेख प्राप्त हुए है जिसमें विभिन्न निर्माण कार्य एवं ग्राम दान का उल्लेख है। वे एक महाप्रतापी एवं धार्मिक प्रवृत्ति के शासक थे। इनके माता पिता वैष्णव थे जबकि वे शैवधर्म को मानते थे तथा परम महेश्वर की उपाधि धारण किये थे।[15] इनके ताम्रपत्र एवं राजमुद्रा में शैवधर्म का प्रतीक चिन्ह नन्दी, त्रिशुल एवं कमंडल आदि अंकित मिलता है। वे अन्य धर्मों के प्रति उदार एवं सहिष्णु भाव रखते थे। इसके शासन काल में राजधानी सिरपुर एवं अन्य स्थलों में शैव, वैष्णव, बौद्ध और जैन धर्मों से संबंधित अनेक स्मारकों एवं कृतियों का निर्माण हुआ। इस काल की धातु प्रतिमाएं कला की दृष्टि से अद्वितीय कही जाती है।[16]

उसके शासनकाल में सिरपुर की खूब उन्नति हुई, उसकी ख्याति दूर–दूर तक फैली थी। वहां बौद्ध यात्रियों का आना जाना लगा रहता था। इस बात का उल्लेख कन्नौज के हर्ष के दरबार में आये चीनी यात्री हेनसांग के यात्रा वृतान्त से प्रकट होता है। हेनसांग दक्षिण भारत की यात्रा के दौरान महाशिवगुप्त के काल में 639 ई. में सिरपुर पहुंचा था। हेनसांग ने यहां अनके बौद्ध विहार, स्तूप एवं बुद्ध की विशाल मूर्तियों का उल्लेख किया है जिसकी दृष्टि से पुरातात्विक अवशेषों से होती है। हेनसांग ने इस क्षेत्र को ''किया–स–लो'' के नाम से उल्लेखित किया है किन्तु यहां की राजधानी के नाम का उल्लेख नहीं किया है। उसका कहना था कि यहां का राजा क्षत्रिय है तथा वह बौद्ध धर्म में आस्था रखता है। उसने लिखा था राज्य में सौ संधाराम (विहार) थे जहां दस हजार महायानी बौद्ध भिक्षु निवास करते थे एवं सत्तर देव मंदिर थे।[17]

महाशिवगुप्त कन्नौज के सम्राट हर्ष का समकालीन था। सिरपुर में किये गये उत्खनन मे बौद्ध विहार, प्रतिमाएँ और शिलालेख प्राप्त हुए हैं, जो उस काल की धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था पर प्रकाश डालते हैं। इनके शासनकाल को दक्षिण कोसल (छत्तीसगढ़) का स्वर्णकाल कहा जाता है।[18] क्योंकि उनके समय का कार्यकाल सुख, शांति एवं समृद्धशाली था। इन्होंने चारों दिशाओं में अपनी प्रशासकीय क्षमता से राज्य का विस्तार किया। इनके काल में शिल्पकला, मूर्तिकला एवं स्थापत्य कला चर्मोत्कर्ष पर रहा।

महाशिवगुप्त बालार्जुन के 27 ताम्रपत्र सिरपुर में एक व्यक्ति के बाड़ी में खुदाई के दौरान प्राप्त हुए है।[19] वातापी नरेश पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख के अनुसार 634 ई. में कोशल नरेश उसके द्वारा पराजित किया गया था और उसने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी। अतः इसके काल में दक्षिण कोसल चालुक्यों के प्रभाव में आ गया था।[20]

महाशिवगुप्त बालार्जुन के बाद के उत्तराधिकारी योग्य शासक सिद्ध नहीं हुए। महाशिव गुप्त के पुत्र महानन्द द्वारा अपने वंश को पाण्डुवंश के स्थान पर सोमवंश कहना प्रारंभ किया। इस तरह सोमवंशियों की एक दूसरी शाखा स्थापित हुई। वे कोसल, कलिंग और उत्कल पर आधिपत्य के आधार पर त्रिकलिंगाधिपति के नाम से विख्यात हुए। इस शाखा की नवीन राजधानी उड़ीसा स्थित ययातिनगर या विनीतपुर में थी। जान पड़ता है कि महाशिवगुप्त बालार्जुन का उत्तराधिकारी महाभवगुप्त विनीतपुर में जा बसा। उसका पुत्र शिवगुप्त हुआ। शिवगुप्त का लड़का जनमेजय हुआ। इसी जनमेजय ने त्रिकलिंगाधिपति की पदवी धारण की। जनमेजय का पुत्र महाशिवगुप्त ययाति हुआ जिसने विनीतपुर का नाम बदलकर ययातिनगर कर दिया। उसका पुत्र महा भवगुप्त भीमरथ हुआ।[21] उसका काल 1000–1015 ई. माना गया है। तदुपरांत उसके पुत्र धर्मरथ ने पॉच वर्ष शासन किया और उसके निधन के बाद उसका भाई नहुषराज सत्ता में आया।[22] उसके पश्चात पाण्डुवंशियों का पता नहीं चलता। प्रत्यक्षतः उनका राज्य

दूसरों के हाथ में चला गया। त्रिपुरी के कल्चुरियों की सेना के लगातार आक्रमण के कारण दक्षिण कौसल के पाण्डुवंशी नरेश निर्बल हो चुके थे तथा कुछ समय बाद वहॉ कल्चुरियों का अधिकार कायम हो गया।[23]

निष्कर्ष

इससे स्पष्ट होता है कि छठवीं शताब्दी ई. में दक्षिण कौसल के बड़े भू–भाग पर पाण्डुवंशी राजाओं का शासन था। इस वंश के राजाओं के अनेक शिलालेख तथा ताम्रपत्र प्राप्त हुए हैं, उनके राज्य की राजधानी सिरपुर थी। पाण्डुवंशी शासक हर्षगुप्त की पत्नी वासटा देवी ने भगवान बिष्णु का एक भव्य मंदिर बनवाया जो कि लक्ष्मण मंदिर के नाम से आज भी विद्यमान है जो उस समय की वास्तुकला का श्रेष्ठ उदाहरण है। महाशिवगुप्त बालार्जुन के शासनकाल में सिरपुर की खूब उन्नति हुई, अनेक बौद्ध यात्री वहॉ आते जाते रहे। सिरपुर में किये गये उत्खनन में अनेक बौद्ध विहार, प्रतिमाएँ और शिलालेख मिले है। उनका शासनकाल छत्तीसगढ़ का स्वर्णकाल कहा जाता है। इस वंश के राजाओ की सभा में सुशिक्षित एवं धुरंधर पंडित रहते थे। उनकी शासन प्रणाली भी अच्छी थी।

संदर्भ सूची

1. http://cg.gov.in/statistics
2. श्रीवास्तव, निर्मलकांत, (2009) *छत्तीसगढ़ की रियासतों में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास,* छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, पृ. 32।
3. वर्मा, भगवान सिंह, (2003) छत्तीसगढ़ का इतिहास, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृ.21।
4. पूर्वोक्त, पृ. 24।
5. अलंग, संजय, (2018) छत्तीसगढ़ इतिहास और संस्कृति, अनामिका प्रकाशन इलाहाबाद, पृ. 127।
6. वीरेन्द्र सिंह, (2008) छत्तीसगढ़ का विस्तृत अध्ययन, अरिहंत पब्लिकेशन, मेरठ, पृ. 224।
7. पूर्वोक्त, पृ. वही।
8. वर्मा, भगवान सिंह, पृ. 24।
9. जैन, बालचंद, (1961) *उत्कीर्ण लेख,* शासकीय प्रकाशन, पृ. 8–9।
10. वर्मा, भगवान सिंह, पूर्वोक्त, पृ. 24।
11. वीरेन्द्र सिंह, पूर्वोक्त, पृ. 224।
12. शर्मा, राजकुमार, (1974) मध्यप्रदेश के पुरातत्व का संदर्भ ग्रंथ, पृ.48।
13. वीरेन्द्र सिंह, पूर्वोक्त, पृ. 225।
14. वर्मा, भगवान सिंह पूर्वोक्त, पृ. 24।
15. पूर्वोक्त, पृ. वही।
16. वीरेन्द्र सिंह, पूर्वोक्त, पृ. 225।
17. पूर्वोक्त, पृ. वही।
18. वर्मा, भगवान सिंह पूर्वोक्त, पृ. 25।
19. वीरेन्द्र सिंह, पूर्वोक्त, पृ. वही।
20. पूर्वोक्त, पृ. वही।
21. वर्मा, भगवान सिंह पूर्वोक्त, पृ. 25।
22. अलंग, संजय,पूर्वोक्त, पृ.127।
23. वर्मा, भगवान सिंह पूर्वोक्त, पृ. 25।

––==00==––